This question paper contains 3 printed pages.]

7745 *आपका अनुक्रमांक .....*

M.A. (एम.ए.) / I A

HINDI (हिन्दी) – Paper 5 (प्रश्न-पत्र 5)

(कथा साहित्य)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

***टिप्पणी** : प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित पूर्व विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. गाँधीवादी राजनीति की दृष्टि से 'रंगभूमि' के नायक सूरदास के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।

अथवा 12

'त्यागपत्र' की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए।

[P.T.O.

2. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की औपन्यासिक भाषा का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा 12

'मैला आंचल' की आंचलिकता पर विचार कीजिए।

3. 'परदा' अथवा 'गदल' कहानी की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

अथवा 12

'नमक का दारोगा' अथवा 'दोपहर का भोजन' कहानी का शिल्पगत वैशिष्ट्य उद्घाटित कीजिए।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) बुढ़िया - बेटा धूप में मुझसे चला नहीं जाता, सिर में चक्कर आता है। नयी-नयी विपत्ति है, भैया, भगवान उस अधम पापी विनय सिंह का बुरा करे, उसी के कारण बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा, नहीं तो बेटा दुकान करता था, हम घर में रानी बनी बैठी रहती थीं, नौकर-चाकर थे, कौन-सा सुख नहीं था। तुम परदेसी हो, न जानते होंगे, यहां दंगा हो गया था।

अथवा 7

मैं भविष्य देख रही हूँ। अमृत के पुत्रो, बड़ा दुर्घटकाल उपस्थित है। राजाओं, राजपुत्रों और देवपुत्रों की आशा पर निश्चेष्ट बने रहने का निश्चित परिणाम पराभव है। प्रजा में मृत्यु का भय छा

गया है, यह अशुभ लक्षण है। अगर तुम आर्यावर्त को बचाना चाहते हो, तो प्राण देने के लिए तत्पर हो जाओ।

(ख) मुकदमा में भी सुराज मिल गया। सभी संथालों को दामुल हौज हो गया। धूमधाम से सेसन केस चला। संथालों की ओर से भी पटना से बालिस्टर आया था। बालिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेचकर दिया था। बालिस्टर पर भी बालिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशक्कर सिंह, रामकिरपाल सिंह और खेलावन तो हरगिज नहीं छूटते। ... खर्चा ? अरे भाई ! जान है तो जहान है! जब फांसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता ?

अथवा 7

.... जिसको तन दिया, उससे पैसा कैसे लिया जा सकता है; यह मेरी समझ में नहीं आता। तन देने की जरूरत मैं समझ सकती हूँ। तन दे सकूँगी, शायद वह अनिवार्य हो, पर लेना कैसे ? दान स्त्री का धर्म है। नहीं तो उसका और क्या धर्म है ? उससे ? मन माँगा जाएगा, तन भी माँगा जाएगा। सती का आदर्श और क्या है ? पर उस की बिक्री - न, न, यह न होगा।